दीदी की यादें आई

दीदी की यादें आई, आया मास जुलाई
दीदी-दादी की जोड़ी, जा सकती नहीं भुलाई....

आया करीब जो उसको सम्मोहित कर लिया था
दीदी मनमोहिनी ने सबके मन को मोह लिया था
झटके से समर्पित हो लौकिक से नाता तोड़ दिया था
दृष्टि से जादू कर सबको बाबा से जोड़ दिया था
वो पालना वो प्यार ग़ज़ब का सबने महिमा गाई.....

दीदी दादी दो देह मगर इक जान सभी कहते थे
क्या सूझ बूझ सम्मान एकता एक ही बन रहते थे
रमणीकता-गम्भीरता, बालक और मालिकपन का
संतुलन सभी ने देखा दीदी में लव और लॉ का
निर्भय निडर निश्चिंत थी दिल में सच्चाई-सफाई.....

मस्तानी गोपी बनकर सार्थक गोपी नाम किया था
तप-त्याग-पढ़ाई सबमें नम्बर वन स्थान लिया था
ईश्वरीय विद्यार्थी का जब भी नाम लिया गया
वो दीदी थी बाबा-बाबा कहकर हर काम किया था
अब घर चलना-घर चलना, कहती क्या करके दिखाई.....